मानवता की राजनीति 'सुदानी फ्रम् नैजीरिया' में

मन्जु वेलायुधन

शोधार्थी, हिन्दी विभाग
श्री शंकराचार्य संस्कृत
विश्वविद्यालय, कालटी, केरल
parusiva.siva@gmail.com

अन्य किसी भी कला सृष्टि की जैसे सिनेमा भी एक सांस्कृतिक प्रयोग है। दुनिया भर की प्रत्येक भाषा में बनने वाली सिनेमा नाम के माध्यम की भाषा मुख्य रूप से उसके दृश्य संभावनाओं पर आश्रित है। निर्देशक द्वारा जाने गए तथ्य एवं भावों के मूल तत्वों को समझकर प्रस्तुत करने में सौन्दर्यात्मकता अथवा सौन्दर्य बोध की ज़रूरत होती हैं। यह सौन्दर्यानुभूति इन्द्रियों द्वारा दिया गया ज्ञान है। इस ज्ञान को तकनीकी के साथ मिलाने से हमें एक नया दृश्यानुभव मिल जाता है। ऐसे ही दृश्यानुभवों के अनंत संभावनाओं को सिनेमा जगत हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

मनुष्य को मनोरंजन कराने, आश्चर्य दिलाने तथा सोचने को प्रेरित करने वाले माध्यम के रूप में समाज में बहुत कुछ करने की क्षमता सिनेमा रहती है। इस नव-औपनिवेशिक समाज में नष्ट हो रहे सांस्कृतिक मूल्यों का पुनर्निर्माण करने की ताकत सिनेमा में है। अथवा इस नव-औपनिवेशिक दौर में एक सांस्कृतिक जगत स्थापित करने में सिनेमा मार्गदर्शक बन सकता है। यह नव-औपनिवेशिकता महज राजनैतिक और वित्त पर हावी हो रहे अधिवेशन मात्र नहीं है बल्कि उसकी प्रतिध्वनि जीवन के समस्त क्षेत्र में गूँज रही है। भाषा, सत्ता, धर्म, आचरण, कला, संस्कृति आदि अनेकानेक क्षेत्रों में भूमंडलीकरण अपनी ताकत दिखा रहा है। नव-औपनिवेशिक शक्तियों के अनुसार समाज में केवल उत्पादक और उपभोक्ता दो वर्ग मात्र है। उससे परे कुछ भी इनकी गणना में नहीं आती। इन्हीं हालातों में उत्पादक और उपभोक्ता मात्र से निकलकर आम आदमी के साधारण जीवन परिस्थिति एवं मानसिक संघर्षों को प्रस्तुत करने का प्रयास कला द्वारा किया जाता है। सिनेमा भी इन्हीं प्रयासों में से एक है। इस प्रयास के दर्जे में मलयालम सिनेमा को भी देखा जा सकता है. 'सुदानी फ्रम् नैजीरिया' फिल्म को भी इसी दृष्टि से देखा जा सकता है। यह फिल्म नव-औपनिवेशिक काल में समाज से नष्ट हो रही मानवीय मूल्यों को बनाए रखने की आवश्यकताओं के बारे में हमें बताती है।

मालाबार की पृष्ठभूमि में फुटबॉल को दिल में बसाये कुछ नौजवानों के ज़रिए एक प्रदेश के प्यार, संस्कृति और आत्मीयता को दर्शाती हुई एक सुन्दर फिल्म है 'सुदानी फ्रम् नैजीरिया'। गाँव के फुटबॉल टीम के नौजवान मैनेजर मजीद, टीम के खिलाड़ी और आफ्रिकी मूल के सामुअल आदि इस सिनेमा के मुख्य पात्र हैं। इनके जीवन परिस्थितियों से सिनेमा आगे बढ़ता है। फुटबॉल के साथ जिन्दगी गुज़ारने वाले कुछ लोगों के साथ सिनेमा की शुरुआत होती है। मजीद एम.वै.सी अरीक्कोड़ की टीम मैनेजर है। फुटबॉल उसके लिए निजी दर्दों से छुटकारा पाने का मार्ग भी है। अपनी टीम के विजय में खुद को सामने और खुद को भूल जाने वाला आदमी है मजीद। सुदानी नाम से पहचानने और प्यार से सुडू नाम से पुकारे जाने वाला आफ्रिकी मूल का खिलाड़ी ही मजीद की टीम की ताकत है।

मालाबार क्षेत्र विशेष रूप से मलप्पुरम् प्रदेश के लोगों के खून में समाए हुए अथवा उनकी ज़िंदगी का अभेद अंश है सेवेन्स फुटबॉल टूर्नामेंट्स (Sevens Football Tournaments)। स्थानीय व्यक्ति होने के नाते निर्देशक इस खेल के स्वत्व को बिना किसी कमी और बिना नाटकीयता से सेवन्स संस्कृति को मूल कथा के साथ बखूबी संजोया है। सिनेमा के पात्रों की बातचीत, व्यवहार आदि के ज़रिए इस खेल प्रेम को तल्लीनता के साथ दर्शाया है।

खेल और ज़िदगी दोनों को दर्शाते हुए फिल्म आगे बढ़ती है। अचानक एक दिन सामुअल बाथरूम में फिसलकर गिर जाता है। इसी वजह से उसके पैर में मोच आ जाती है और उसकी हड्डी टूट जाती है। सामुअल की देखभाल की ज़िम्मेदारी मजीद के कंधों पर आ जाता है। मजीद और उसकी माँ, पड़ोसी और आसपास में रहने वाले लोग सामुअल को न केवल घर में जगह देते हैं बल्कि उसे अपने हृदय में बसा लेते हैं। वे सामुअल को उन्हीं में से एक समझ कर अपनाते हैं। भाषाई अंतर होते हुए भी वे एक दूसरे से हृदय की भाषा से बातचीत करते हैं। मजीद की माँ सामुअल अथवा सुडु को अपना ही बेटा या फिर अपने बेटे से कहीं ज्यादा समझकर उसकी देखभाल करने में पीछे नहीं हटती। मजीद की माँ के साथ पड़ोसिन और उसकी सहेली बीयुम्मा भी सुडु की देखभाल में हाथ बटाती है। उन दोनों के बातचीत से बहुत ही स्वाभाविक तरीके से मुसलमान जाति के स्त्री जनों की शिक्षा, शादी, सामाजिक परिस्थिति, चयन के हक आदि के बारे में निर्देशक स्टीरियो टाइप (Stereo type) मॉडल से हटकर चित्र खींचा है। अपने सौतेले बाप के प्रति मजीद का व्यवहार से दर्शकों के दिल में चोट पहुँचता है। सुडु से मिलने के लिए आए मजीद के सौतेले बाप अपने आपका परिचय कराते हुए फादर शब्द को दोहरा के दर्शकों के सामने अपनी बेबसी और प्यार की गहराई को व्यक्त करते हैं।

निर्देशक, सामुअल (सुडु) के मोबाइल वॉलपेपर (Mobile Wall Paper) के ज़रिए उसके अपनों के चेहरे हमारे सामने पेश करता है। साथ ही साथ उसके सपने और व्यवहारों के ज़रिए नैजीरिया की जीवन परिस्थिति, परिवार का तनाव और अन्य देश में आकर खेलने का कारण आदि भी व्यक्त होता है। सामुअल के अपनों की मृत्यु के साथ उसका धर्म एवं उस धर्म के अनुकूल शेषक्रिया की ज़रूरतों की बातें भी चर्चा में आ जाती हैं। सिनेमा में निर्देशक मनुष्य के धर्म से परे मानवितकता से बुने रिश्तों को हमारे सम्मुख प्रस्तुत

किया है। यहाँ सहानुभूति से स्वानुभूति तक पात्रों की यात्रा बिलकुल मानवीयता से उत्पन्न अनुभूति के बल पर है। इस सिनेमा में चर्चित एक और मुद्दा है मलप्पुरम् प्रदेश के स्वत्व पर उठी राष्ट्रवाद की ऊँगली अथवा धर्म द्वारा दी गई अपरत्व का बोध। मुसलमान की ज़िंदगी में जाँच एजेन्सी के शक भरी निगाह एवं किसी भी हालात में धर्म के कारण उत्पन्न धार्मिक असुरक्षा आदि को कथागति को ठेस पहुँचाए बिना निर्देशक ने प्रस्तुत किया है। ऐसे सार्वजनिक चेतना का प्रतिरोध करने की ज़रूरतों पर अलग-अलग जगहों में सिनेमा संकेत देता है। दृश्य को महत्व देने वाले कथा होने पर भी उसमें निहित तत्व को बल देने वाली पटकथा शैली इस फिल्म की खूबी है। मानव मन को अथवा मानवीयता को प्रकट करने के लिए किसी भाषा की ज़रूरत नहीं है। प्यार नाम की एकमात्र भाषा बाकी सब को पार करने के लिए पर्याप्त है। इसी तत्व को यहाँ दर्शाया है। फुटबॉल के नशे के साथ बढने वाले अमूल्य एवं निसीम दोस्ती और उन लोगों के बीच का निस्वार्थ एकता का चित्र खींचने का प्रयास यह फिल्म करती है। अपने दीवारों के बाहर की दुनिया को जानने और उसके ज़रिए एक सामाजिक पशु बनने का आह्वान सिनेमा करता है। अनेक संस्कृतियों वाले लोग एक साथ रहने वाले केरल जैसे राज्य में संस्कृति एवं प्रदेशिकता के दीवारों को तोड़कर, सच्चा मनुष्य बनकर मानव हित के लिए काम करने का संदेश 'सुदानी फ्रम् नैजीरिया' में मिलता है।

किसी भी फिल्म की सफलता का आधार केवल सितारे नहीं बल्कि आत्मा को छू लेनेवाली कथा एवं प्रस्तुती भी होती है इसका सबूत है प्रस्तुत फिल्म। शरणार्थी (Refugees) की ज़िंदगी, आभ्यंतर विद्रोह, युद्ध एवं उससे जूझते लोगों की जुबान हैं यह फिल्म। रियलिस्टिक अप्रोच (Realistic Approach) के ज़रिए ही अपनी पहली फिल्म का निर्देशन बहुत अच्छी तरीके से ज़करिया ने की है। अपने ही जीवन क्षेत्र के सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं प्रादेशिक स्वत्व-बोध को संबोधित करने में निर्देशक ने विजय प्राप्त की है।

फिल्म की पार्श्व संगीत पात्रों की भावनाओं के साथ घुल-मिल जाने वाला है। फिल्म का पार्श्व संगीत रस विजन का है। जन के खेल प्रेम एवं उत्साह का समन्वय है कुराह नामक गाना, जिसका आलापन एवं रचना शहबास अमन ने की है। स्वाभाविक व्यवहारों को उसके निर्मलता के साथ जैसे के वैसे अंकन करनेवाले छायांकन इस फिल्म को और रोशन बना दिया है। बिना किसी नाटकीयता से प्रत्येक फ्रेम् को छायाग्राहक शैजु खालिद ने प्रस्तुत किया है। फिल्म की कथा गति और आस्वादन को प्रवाहमय रखनेवाला

संपादन नौफल अब्दुल्ला ने की है। मिनिमलिस्टिक पाटेर्न (Minimalistic pattern) में की गई पटकथा रचना स्वयं निर्देशक का ही है। मुख्य पात्र मजीद, सामुअल और माँ से लेकर छोटे बडे किरदार निभाये अभिनेता तक बहुत अच्छे और स्वाभाविक अभिनय के साथ दर्शकों के मन में स्थान पाते हैं।

क्लैमाक्स (Climax) में एक दूसरे के जर्सी (Jersey) का अदला बदली महज एक लेने-देन की नहीं बल्कि मानवता की राजनीति को उजागर करता है। मानव की मौजूदगी के काल तक कायम रहनेवाली मनुष्यता और एक्ल संस्कृति की राजनीति को यहाँ दर्शाया है। निसीम प्यार और मानवीयता की राजनीति रचने में 'सुदानी फ्रम् नैजीरिया' संपूर्ण विजय प्राप्त की है।

नव-उपनिवेशवाद मनुष्य मन में स्वार्थ भावनाओं को उत्पन्न करती है। प्यार, करुणा, अनुताप, आश्रय आदि मूलवत भावों के स्थान पर औपनिवेशिक शक्तियों ने हमारे दिमाग में लोभ, मोह, स्वार्थ आदि भावों को थोप दिया है। इसके कुपरिणामों के बारे में सोचे बिना लोग इन्हीं स्वार्थ भावों के पीछे भाग रहे हैं। अथवा जाने अनजाने में हम सब इन्हीं के वक्ता बन रहे हैं। विकासोन्मुखी अविकसित और दरिद्र देशों के कंधे पर थोपा गया वित्तीय बोझ का दबाव उपनिवेशवाद का ही परिणाम है। प्रत्येक देश की वित्तीय रूप में आत्मनिर्भर होना, सामाजिक एवं मानवता का विकास करना , क्षेत्र, राष्ट्र का निर्माण करना आदि को विकल लक्ष्य स्थापित करना औपनिवेशवादियों का ही कुतंत्र है। इन कुतंत्रों का पर्दाफाश करके मानवीयता की स्थापना करने में प्रस्तुत फिल्म कामयाब हुई है।